ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

शोध के प्रमुख सोपानः ज्ञान की समस्या को सुलझाने के लिए ''मानव जीवन का आधार ग्रामीण – नगरीय सम्बन्ध''

बाबूलाल शर्मा
शोध छात्र, भूगोल विभाग, विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

डा. हनुमान प्रसाद
भूगोल विभाग, सहायक आचार्य कला संकाय टांटिया
टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

परिचयात्मक भूमिका

ग्रामीण एवं नगरीय सम्बन्धों का अध्ययन देष में नगरीय भगोल में नगरीय पृष्ठभूमि के अंतर्गत किया जाता है। प्रस्तुत षोध कार्य यहीं तक सीमित नहीं है। वरन् इसके अन्तर्गत विभिन्न पहलुओं को सम्मिलित करते हुए ग्रामीण नगरीय सम्बन्धों का निर्धारण करने का प्रयास किया गया है। ग्रामीण नगरीय सम्बन्धों को प्रस्तुत में पदानुक्रमों सम्बद्धता एवं विभिन्न सेवाओं को सम्मिलित किया गया है। ग्रामीण नगरीय सम्बन्धों के निर्धारण की यह विधि नगरीय भूगोल में नवीनतम विधि है, जो अपने विकास की प्रारम्भिक अवस्था में है। एक ग्रामीण केन्द्र अपने समीपवर्ती ग्रामीण केन्द्र से किन कारणों से जुड़ा हुआ है तथा कौनसे वस्तु एवं सेवाये है जिनका परिवत्रहन पूर्ति कटिबंधों से मांग क्षेत्रों की ओर होता है तथा कौन सभौगोलिक कारण इसके विस्तार एवं संकुचन को प्रभावित करते हैं आदि विषयों का क्रमबद्ध अध्ययन किया गया है।

नगर विनियोजकों ने भी इस तथ्य या विभिन्न स्त्रोंतों पर बल दिया है कि एक कस्बा निकटवर्ती ग्रामीण क्षेत्र से अन्तसम्बन्धित होता है। इसे नगर का प्रादेषिक कार्य कहा जाता है। जो उसका निकटवर्ती पर्यावरण होता है। प्रत्येक नगरीय बसाव चाहे बड़ा हो या छोटा, कम या अधिक उस प्रदेष की सेवायें प्रदान करना होता है। ''नगर स्वयं जन्म नहीं लेते, बल्कि निकटवर्ती देहात क्षेत्र ही उसको ऐसा कार्य करने के लिए जन्म देते है।

प्रस्तावित शोध का उद्देश्य

भारत की अधिकांष जनसंख्या गांवों में निवास करती है। अतः यहां की सभ्यता एवं संस्कृति से ग्रामीण तत्वों का प्रभाव सर्वत्र दर्षनीय है। नगर ग्रामीण सम्बन्ध न केवल एक सामयिक संकल्पना है। बल्कि एक भौगोलिक संकल्पना भी है। भारत का जनगणना विभाग 5,000 जनसंख्या तक के केन्द्रों को ग्रामीण क्षेत्र के अंतर्गत रखता है। लेकिन कई केन्द्र ऐसे भी हैं जो 5000 से अधिक जनसंख्या के हैं। लेकिन अभी भी जीविकोपार्जन तथा बसाव की दृष्टि से ग्रामीण है। इस प्रकार कई ऐसे स्थान भी हैं जिनकी जनसंख्या 5000 से कम है लेकिन इनमें नगरीय विषेषताएं अधिक विकसित हुई है।

ग्रामीण नगरीय सम्बन्धों का अध्ययन इन दूर-दृष्टि विषयों के कार्यात्मक सम्बन्धों के मध्य प्रभावकारी संतुलन के प्रष्न से भी सम्बन्धित है। इसका अभिप्राय कृषकों एवं नगरवासियों के मध्य सम्बन्धों को बेहतर बनाना है। इसके लिए कृषकों को आवष्यक सेवाऐं प्रदान तथा नगरवासियों को खाद्यान, दूध तथा श्रमिकों की आपूर्ति सुनिश्चित करना है। इसके अंतर्गत निकटवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों में निष्चित व्यवसायों को स्थानीयकरण करके लोगों को रोजगार की सुविधा उपलब्ध कराना जिससे उनके

Copyright © 2020 Authors

सामान्य जीवन स्तर में वृद्धि की जा सके और उसी समय ग्रामीण केन्द्रों की कृषि क्रियाओं की पहचान इस तरह से हो कि वे निककवर्ती लोगों को आवष्यकताओं की पूर्ति कर सकें।

प्रस्तावित शोध का महत्व

वर्तमान समय में ग्रामीण–नगरीय सम्बन्धों के अध्ययन में मात्रात्मक अध्ययन का महत्व अधिक है। पदानुक्रम को निर्धारित करने में कार्यों को बल दिया है। हनुमानगढ़ तहसील में ग्रामीण–नगरीय सम्बन्धों का पदानुक्रम अध्ययन दो संकल्पनाओं पर आधारित है। केन्द्र की नाभिकीयता और नाभिकीय केन्द्रों के कार्य या सेवायें जो क्षेत्र के लोगों को उपलब्ध है।

ग्रामीण क्षेत्रों की कृषि, व्यापार, यातायात, रोजगार और जीवन स्तर अपने पास स्थित नगरीय प्रभाव से प्रभावित है। गांव जितना अधिक नगर के नजदीक होगा उतना ही सघन सम्बन्ध दोनों के मध्य होंगे।

नगर ग्रामीण क्षेत्रों के लिए आर्थिक आधार पर निर्माण भी करते हैं क्योंकि उस प्रदेष में उत्पन्न संसाधनों का उपयोग केन्द्रीय स्थान पर ही किया जाता है। अतः नगरीय ग्रामीण अन्तसम्बन्ध इतना घनिष्ठ है कि इन्हें पृथक नहीं किया जा सकता। स्वतंत्रता के बाद गांव की व्यवस्था में सामाजिक व आर्थिक दृष्टिकोण से आधारभूत परिर्वतन आये है और कस्बे तथा उसके निकटवर्ती गांव के अन्तसम्बन्धों का परिणाम कस्बे और देहात से होकर ही ग्रामीण केन्द्रों तक पहुंचते है। अतः ग्रामीण संस्कृति पर नगरीय जीवन ढंग की एक अमिट छाप दिखाई देती है।

भारत में नगर प्रदेषों के आयोजन के लिए पृष्ठभूमि क्षेत्र की ओर कम ध्यान दिया गया है। इस सम्बन्ध में सन् 1956 में नगर नियोजन संगठन ने दिल्ली और उसके निकटवर्ती क्षेत्रों का मास्टरप्लान तैयार किया। जो एक अपवाद स्वरूप है। इस दिषा में टी.पी.ओ. द्वारा किये गये अनुसंधानों से ज्ञात हुआ है कि नगर नियोजन के लिए पृष्ठभूमि की जानकारी अत्यंत आवष्यक है।

नगर अपने देहात क्षेत्र के अतिरिक्त उत्पादन पर निर्भर करते हैं। ये यातायात मार्गों के केन्द्र होते हैं तथा इस देहात क्षेत्र से यातायात मार्गो द्वारा जुड़े होते हैं। यहां से इस क्षेत्र को चारों दिषाओं में मार्ग फैले रहते हैं। जिनके द्वारा नगर इस क्षेत्र की सेवा करता है। नगर अनेक कार्य–व्यापारिक, औद्योगिक, प्रषासकीय, सांस्कृतिक करता है जो ने केवल नगर वासियों के लिए होते हैं बल्कि समीपवर्ती ग्रामीण क्षेत्र क लिए भी होते है।

शोध के प्रमुख सोपान

1. □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□
2. नगर वह छोटी हो या बड़ी, गांव हो या कस्बा, नगर हो या महानगर केन्द्रीय कार्यो द्वारा अपने समीपवर्ती क्षेत्र की सेवा करता है।
3. नगर नाभिकी केन्द्र में स्थित होने के कारण देहात से कच्चा माल, श्रम शक्ति आदि वाणिज्य और औद्योगिक कार्यो के लिए प्राप्त होता है। जहां एक कस्बे और देहात क्षेत्र में आर्थिक व राजनैतिक अन्तर्सम्बन्धता पाई जाती है।

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

4. नगर अपने समीपवर्ती चारों और से धीरे प्रदेष पर भोजन, दूध, साग–सब्जी, फल आदि के लिए निर्भर करता है।
5. नगर अपने व्यापारिक संस्थानों के लिए थोक व फुटकर व्यापारी, □□□□□□□□ संस्थानों के लिए कार्यकर्ता व कच्चा माल प्राप्त करता है।
6. क्षेत्र में अनेक व्यक्ति प्रषासनिक यातायात □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□ है। इस प्रकार नगर अपने चारों ओर के क्षेत्र से गहरा सम्बन्ध रखता है।

प्रस्तावित शोध का निष्कर्ष

ग्रामीण केन्द्र अपने निकटवर्ती के नगरीय केन्द्र के प्रभाव क्षेत्र के भाग होते हैं जो खाद्यान, दुध, ईंधन, सब्जियां, चारा श्रमिक आदि नगरीय केन्द्र को प्रदान करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ:–

1. Appleton, J.H. 1960 : The Geography o communication in Great Britain, London.
2. Alam, H. 1965 : Hydrabad and Secundrabad (Twin Cities) A study in Urban Geography, New Delhi.
3. Barker, W. H. : Trade and communication in tropical Africe, Vol 1, No. 3 1959
4. Bergstem, K.E. 1951 : Variability in intensity of urban fields As illustrated by birth places in studies In rural urban interaction, Lund.
5. Bhattacharya, A.N. 1964 : Evolution of chittorgarh, University of Udaipur Research studies, No. 2

Copyright © 2020 Authors